हाथी के जीवन संघर्ष और संरक्षण को बयां करती फिल्म

वेयर दि एलीफैंट स्लीप्स

निमिष कपूर

कोलकाता स्थित सत्यजीत रे इंस्टीट्यूट ऑफ़ फिल्म एंड टेलीविज़न (एस.आर.एफ.टी.आई.) का ऑडिटोरियम दर्शकों से खचाखच भरा था, और दर्शक टकटकी लगाए भारतीय हाथियों के तकलीफदेह जीवन और उनकी चुनौतियों को दर्शाती डाक्यूमेंट्री फिल्म 'वेयर दि एलीफैंट स्लीप्स' (जहाँ हाथी सोता है) देख रहे थे। फिल्म में निर्देशक दर्शकों से पूछ रही थीं कि क्या आपने कभी सोचा है कि इतने कुशल दिमाग और जटिल दिल वाला कोई जानवर जंजीरों में जकड़कर, भारी-भरकम हौदों को लेकर जब राजस्थान की धधकती गर्म सड़कों पर चलता है तो उस पर क्या बीतती होगी? क्या आपने कभी स्वयं से पूछा है कि उनकी दर्दभरी आँखें आपको कैसे देख रही हैं, जब आप उन्हें केला खिलाते हैं या आशीर्वाद लेते हैं? हाथी आपके लिए एक मनोरंजन और शान की सवारी है लेकिन उनके लिए अथक दुख, तकलीफ और शोषण का जीवन भर है।

भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2019 के अंतर्गत आयोजित भारत के अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्मोत्सव के दौरान, नवम्बर 2019 के पहले हफ्ते की एक सुबह एस.आर.एफ.टी.आई., कोलकाता में डाक्यूमेंट्री फिल्म 'वेयर दि एलीफैंट स्लीप्स' का प्रदर्शन किया जा रहा था, जिसमें भारतीय हाथियों की त्रासदी देखकर दर्शकों की आँखे नम थीं। राजस्थान के आमेर किले के हाथियों के जीवन पर केंद्रित फिल्म 'वेयर दि एलीफैंट स्लीप्स' में जिस हाथी की कहानी दर्शायी जा रही थी वह पूरे भारत में वाणिज्यिक कैद में रखे गए लगभग 3,500 हाथियों के तकलीफदेह जीवन का नतृत्व कर रहा था। इन बंधक हाथियों का इस्तेमाल पर्यटकों की सवारी और मनोरंजन के लिए किया जाता है। आज देश भर के फिल्म उत्सवों में 'वेयर दि एलीफैंट स्लीप्स' फिल्म दर्शकों का ध्यानाकर्षण कर रही है।

इस फिल्म की फिल्मकार सुविख्यात वन्यजीव कार्यकर्ता श्रीमती ब्रिगिट उट्टर कॉर्नेत्स्की भी इस फिल्म प्रदर्शन में शामिल थीं, जिन्हें फिल्मोत्सव में मुख्य अथिति के तौर पर आमंत्रित किया गया था। जर्मन मूल की स्विट्ज़रलैंड निवासी श्रीमती ब्रिगिट उट्टर कॉर्नेत्स्की 'एलीफैंटेन इन नॉट' संस्था की अध्यक्षा और संस्थापक हैं, साथ ही कैप्टिव एलीफैंट, एफ. आई. ए. पी. ओ., भारत की सम्मानित राजदूत भी हैं। कोलकाता में अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्मोत्सव के समन्वयक के रूप में इस लेखक को ब्रिगिट के साथ वार्ता का अवसर मिला, जिसमें भारत की संस्कृति में वन्य-जीवों के सम्मान के प्रति उनके गहरे लगाव को जानने का मौका मिला।

राजस्थान में हाथी पर्यटन के लिए खास आकर्षण है। हर सुबह हाथियों का रंग-रोगन कर उन्हें सजाया जाता है ताकि सैलानी खुश होकर उनकी सवारी मुंहमांगे दामों पर करें। फिल्म में माध्यम से ब्रिगिट बताती हैं कि शायद हम नहीं जानते कि हमारे मनोरंजन से और हाथियों के वाणिज्यिक प्रयोग से हाथियों का जीवन खतरे में है? वे कहतीं हैं कि बंधक हाथी के मालिक पैसे के लालच में उन पर अत्याचार करते हैं। जिन कठोर परिस्थितियों में वे रहते हैं और विभिन्न प्रकार के शारीरिक-मानसिक कष्ट सहते हुए जीवन के लिए खतरनाक संक्रमण का जोखिम उठाते हैं, यह उनके अवसाद का कारण बनता है।

ब्रिगिट हाथियों के संरक्षण और उनके बेहतर जीवन के लिए संघर्ष करने के लिए पिछले लगभग 11 वर्षों से हर वर्ष भारत आ रही हैं और बगैर किसी आर्थिक सहायता के भारत के हर उस राज्य में जाकर लोगों को हाथियों के संकटमय जीवन के प्रति संवेदनशील बना रही हैं, जहाँ हाथियों का वाणिज्यिक कार्यों और मनोरंजन के लिए प्रयोग हो रहा है। राजस्थान, असम, उत्तर-पूर्व के अन्य राज्यों के सुदूर इलाकों सहित दक्षिण भारतीय राज्यों में ब्रिगिट की पहचान हाथियों के संरक्षण को समर्पित एक जीवन के तौर पर है जहाँ वे लम्बा समय ग्रामीण परिवेश में झोपड़ी और कच्चे घरों में बिताती हैं और जंगलों में खतरा मोल लेकर हाथियों के संकटमय जीवन को डॉक्यूमेंट्री फिल्मों में उतारती हैं।

ब्रिगिट बताती हैं कि भारत में 2010 में हाथियों के साथ उनका पहला संपर्क राजस्थान के हाथी गांव की ओर जाने वाले राजमार्ग पर हुआ। ''मैंने वहां सूर्यास्त के दौरान दूर से विश्राम के लिए जाते हाथियों के धुंधले छायाचित्र देखे। मैंने टैक्सी ड्राइवर से कहा कि उनका पीछा करो। आप इस बात पर विश्वास नहीं करेंगे कि फिल्म के एक भी दृश्य के फिल्मांकन के बिना ही मेरे मन में जो शीर्षक था- 'जहाँ हाथी सोता है', वह यथार्थ हो चला था।

ब्रिगिट कहती हैं कि हाथियों की बहुत मजबूत स्मृति होती है। एक हाथी था जो मुझे कुछ दिनों पहले तीसरी बार मिला था, और मैं उससे बहुत प्रभावित हुई कि कैसे वह अपनी सूंड लहरा रहा था। मैं देख रही थी कि उसने मुझे पहचान लिया था। लेकिन यह स्पष्ट रूप से निर्भर करता है कि आप अच्छे व्यक्ति हैं या बुरे, क्योंकि हाथी आसानी से समझ सकते हैं कि आप किस नियत से उनके पास आये हैं। यदि आप उन्हें नुकसान पहुँचाने आये हैं तो वे आक्रामक हो जाते हैं। हाथियों की समस्याओं के बारे में लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, जब हाथी आमेर किले तक जाते हैं, तो उन्हें काफी मुश्किलें होती हैं। वे निर्जलित (प्यासे) रहते हैं, वे बूढ़े हो चुके हैं, और शायद ही उन्हें राजस्थान की भयानक गर्मी में आराम करने के लिए समय मिलता है। एक खास बात और कि भारत में वाणिज्यिक कार्यों के लिए हाथियों को गन्ना खूब खिलाया जाता है ताकि वे मालिक की उम्मीदों पर खरे उतरें और उनके मन-माफिक मेहनत करें। उन्हें ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहिए। हाथियों के विकास के लिए विभिन्न पोषक तत्वों की आयश्यकता होती है। जंगली हाथी लगभग 60 किस्म के भोजन खाते हैं।

ब्रिगिट के अनुसार ''हाथी एक अति संवेदनशील जानवर है जिसे हमने उसके प्राकृतिक आवास से बाहर कर दिया है और कैद में रखा है। मुझे लगता है कि हमें उनकी देखभाल करने की पूरी जिम्मेदारी लेने की जरूरत है। उनके साथ प्यार और सम्मान से पेश आना चाहिए, खाने या काम करने के लिए पीटा नहीं जाना चाहिए। मैंने जयपुर में हाथियों के रहने की स्थिति से संबंधित संवेदनशील मामलों में लोगों को शिक्षित करने के लिए यह फिल्म बनाई है''। ये हाथी रेगिस्तानी परिस्थितियों के अनुकूल नहीं हैं और इनमें इतना वजन उठाने का भी अनुकूलन नहीं है। आमेर किले के ये हाथी या तो पर्यटकों तक सीमित हैं या कंक्रीट की दीवारों के बीच बंद हैं।

हाथियों के प्रति गहरी पीड़ा और सहानुभूति के साथ, ब्रिगिट कहती हैं कि मुझे एक भयानक वास्तविकता के बारे में बताया गया जिससे उन्हें सबसे अधिक परेशानी हुई। राजस्थान के सुदूर क्षेत्रों में ''फाजान'' नामक एक सदियों पुरानी प्रथा है, जिसमें शिशु हाथियों को इस हद तक प्रताड़ित किया जाता है कि उनके बचपन का उत्साह कहीं खो जाता है और अंततः वे अपने स्वामी के अधीन हो जाते हैं। इस निर्दयता और हाथियों पर हो रहे अत्याचार के लिए आज हर संभव प्रयास सभी स्तरों पर आवश्यक हैं।

ब्रिगिट कहती हैं कि उन्हें केवल यही लगता है कि हाथी पर्यटन को रोकना चाहिए! हाथियों के पर्यटन में उपयोग पर प्रतिबन्ध लगाया जाए और इसका सख्ती से पालन किया जाए, यही एकमात्र उपाय होगा। इसके अलावा, समस्या का समाधान शिक्षा में निहित है। लोग अपने कार्यों के परिणामों से अवगत नहीं हैं। कैद किए गए इन हाथियों का यहाँ होने का कोई अर्थ नहीं है बल्कि इन्हें जंगलों में आज़ाद रहने देना चाहिए।

फिल्म निर्माण के समय हाथियों की तकलीफों पर विचार-विमर्श करती ब्रिगिट

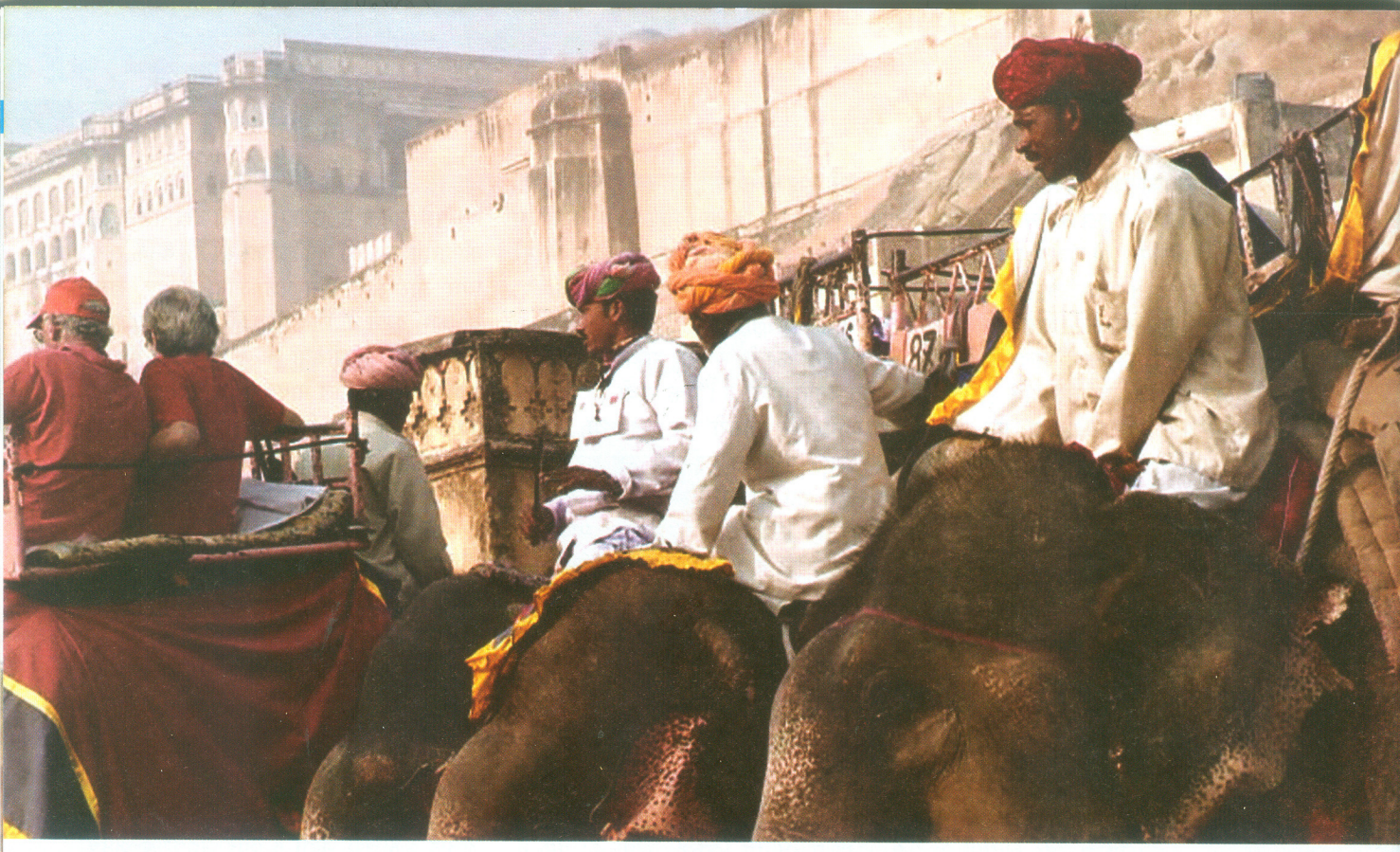

ब्रिगिट बताती हैं कि फिल्म की शूटिंग के समय तो मेरा बहुत स्वागत किया गया, लेकिन जब मैंने हाथियों पर हो रही निर्दयता की तस्वीरें लेनी चाहीं तो मुझे उसकी अनुमति नहीं थी। मैं एक विशेष दृश्य फिल्माना चाहता थी, जहां महावत हाथी के शीर्ष पर बैठते हैं और उन्हें धमकाकर, पीटकर गन्ना खाने के लिए मजबूर करते हैं। हाथी भयभीत होकर अपने मालिक का कहना मानते हैं। मैं इस क्रूर वास्तविकता को दिखाना चाहती थी, लेकिन मुझे इसकी अनुमति नहीं मिली।

ब्रिगिट कहतीं हैं कि राजस्थान के बीमार हाथियों को वास्तव में चिकित्सा की तत्काल ज़रूरत है। एक हाथी जमीन पर सबसे बड़ा स्तनधारी जीव है और मैं व्यक्तिगत रूप से यह अनुभव किया है कि हाथी मुक्त होना चाहते हैं। वे अत्याचार नहीं सह सकते। हाथी एक इंसान की तरह अपने परिवार के साथ जीना चाहते हैं, वे अच्छा खाएं और बेहतर जीवन जिएं, इसके लिए हमें सोचना होगा। राजस्थान में हाथियों के इलाज के लिए पशु चिकित्सकों का भी अभाव है। एक डॉक्टर था, जिसने फिल्म के दृश्यांकन के दौरान में सीता नमक हाथी की मदद की थी। उस चिकित्सक पर प्रतिबंध लगा दिया गया था क्योंकि उसने हाथी को दवा दी थी। हालाँकि वहां ह्यूमन सोसाइटी इंटरनेशनल ने एक हाथी

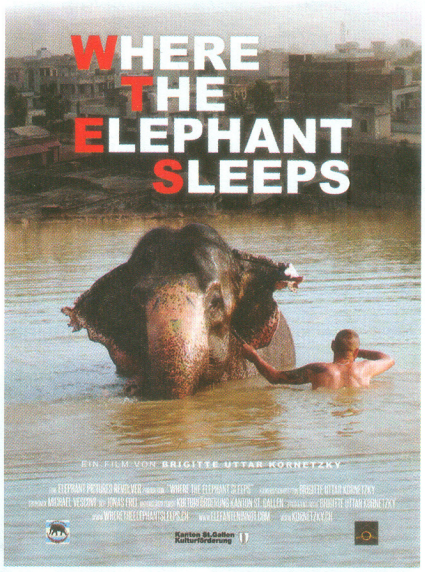

'वेयर दि एलीफैंट स्लीप्स' फिल्म का दृश्य

मोबाइल वैन की स्थापना की है और दो सहायक डॉक्टरों को हाथियों की देखभाल में लगाया है। हाथी के मालिक अपने बीमार हाथियों का इलाज नहीं कराना चाहते हैं क्योंकि हाथी मालिकों को बीमार हाथियों को बदलने के लिए वित्तीय सहायता अच्छी लगती है। उन्हें बीमार हाथियों के इलाज पर पैसा खर्च करना व्यर्थ लगता है।

राजस्थान के हाथी गाँव में हाथियों को बचाने के संघर्ष में पशु चिकित्सकों या नई दवाइयों के स्थान पर आज भी सदियों पुरानी व अवैज्ञानिक झाड़-फूंक और जादू-टोने का प्रयोग किया जाता है। आज हाथी कई तरह के बुखार, तपेदिक और अन्य बीमारियों से पीड़ित हैं। फिल्म में दर्शायी गई "सीता" नामक एक हथिनी संक्रमित घाव के कारण दम तोड़ देती है, उसे जटिल फ्रैक्चर होता है जिसका इलाज संभव नहीं। लाइलाज रोग और असहनीय पीड़ा में एक हाथी को कब तक जीवित रहने दिया जाए? उसे इच्छा-मृत्यु का अधिकार होना चाहिए। फिल्म निर्देशक ब्रिगिट को स्वयं फिल्म किरदार निभाना पड़ता है जिसमें वे एक हाथ में मोबाइल और दूसरे में एक कैमरा लिए, हाथी मालिकों द्वारा प्रतिबंधित डॉक्टर को ढूंढती हैं, और सीता हथिनी की इच्छा मृत्यु के लिए संघर्ष करती हैं। इस प्रकार डॉक्यूमेंट्री के फिल्मांकन के दौरान ही रिकॉर्ड समय में और तमाम बाधाओं के बावजूद, सीता हथिनी राजस्थान में पहली बार आधिकारिक इच्छा मृत्यु को प्राप्त होती है, शायद भारत के इतिहास में भी पहली बार।

फिल्म में दर्शाया गया है कि सीता पाँच लंबे हफ्तों तक जमीन पर पड़ी तड़पती रही जब तक कि अंतिम इंजेक्शन के आधिकारिक कागज पूरे नहीं हुए। एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित

फिल्म 'वेयर दी एलीफैंट स्लीप्स' बनाने के दौरान कैमरे के साथ ब्रिगिट एवं स्थानीय लोग

भारत के अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्मोत्सव में ब्रिगिट से वार्ता के दौरान लेखक

हाथी यदि एक बार जमीन पर लेट गया तो वह अधिकतम आठ या दस दिनों से अधिक समय तक जीवित नहीं रहता। शरीर के भारी वजन के कारण हाथी के आंतरिक अंगों पर इतना दबाव पड़ता है कि फेफड़े में पानी और त्वचा की सड़न अवस्थ जानवर की मौत के अतिरिक्त कारण बन जाते हैं। हालाँकि, सीता पाँच सप्ताह तक इस कष्टमय जीवन जीती रही और अपनी इच्छा मृत्यु के लिए आधिकारिक घोषणा की प्रतीक्षा करती रही।

भावुक होकर ब्रिगिट कहती हैं। "सीता मेरे लिए शहीद हो गई। इस घटना के दो वर्ष बाद, सितंबर 2014 में, दोस्तों के साथ मिलकर, मैंने एलिफेंटेन इन नॉट (हाथियों की ज़रूरत), स्विट्जरलैंड में एक चैरिटी संस्था और एक वर्ष बाद जर्मनी में एक संगठन की स्थापना की। हाथियों के लिए बीमा कंपनियां अपने मृत हाथियों के मालिकों को 20,000 और 70,000 यूरो का भुगतान करती हैं। यह काबिलेगौर है कि पशु को जीवित रखने और चिकित्सा देखभाल के लिए खर्च अप्रचलित है और प्रतिकूल है"। वे कहती हैं कि मौतों के बावजूद, हाथियों की आबादी स्थिर है। एक नया हाथी जल्दी से खरीदा जाता है इससे पहले कि एक बीमार हाथी मर जाए। हाथी को व्यक्तिगत बाड़ों में रखा जाता है, जहां वे एक कंक्रीट की ढलान वाली जमीन पर जंजीरों से जकड़े खड़े रहते हैं। उनके लिए किसी चिकित्सक की देखभाल भी नहीं होती, और भोजन उन्हें सिर्फ जीवित रखने और कड़ी मेहनत करने के लिए दिया जाता है। खराब उपचार के साथ शादियों या निजी आयोजनों में बहुत अधिक श्रम के साथ उन्हें केवल गन्ने का आहार दिया जाता है, जिससे उनका तनावपूर्ण जीवन और भी अधिक असहनीय बन जाता है।

ब्रिगिट बताती हैं कि बहुत से हाथी लंगड़े हैं, वे अपने घुटनों, कंधों और कोहनी के जोड़ों में गठिया से पीड़ित हैं। हाथियों के बड़े पैर अत्यधिक संवेदनशील होते हैं जो कई अनदेखी समस्याओं और बीमारियों का स्रोत हैं। हथियों में अधिक वजन ढोने के कारण एड़ियों में समस्या पैदा होती है और पैर के नाखून टूट जाते हैं। पैर की उंगलियों के बीच के स्थान और टूटे हुए तलवों में छोटे पत्थर धंस जाते हैं और असहनीय दर्द और मरोड़ का कारण बनते हैं। ये खतरनाक संक्रमण हाथियों के पैर सड़ा देता है। कैद में कई हाथी पैर की दुर्गंध से पीड़ित होते हैं और अंततः उनकी एक दर्दनाक मौत हो जाती है। यही हाल मादा हाथी सीता का था। उसकी चोटें पारंपरिक रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले अंकुश के कारण होती हैं, जो एक हंसिये की तरह धातु का उपकरण जिसका उपयोग महावत अपने जानवरों को नियंत्रित करने के लिए करते हैं। हालांकि, अक्सर अंकुश का दुरुपयोग किया जाता है जो हाथी की गंभीर चोटों का कारण बनता है, और अधिकतर मामलों में हाथी की मृत्यु हो जाती है।

ब्रिगिट कहती हैं कि यदि आप छुट्टियों में किसी ऐसी जगह जाने की योजना बना रहे हैं जहाँ हाथी की सवारी मिलती है तो कृपया ऐसी जगह न जाएँ, इसके स्थान पर मैं बैंगलोर या चेन्नई में वन्यजीव बचाव और पुनर्वास केंद्र (WRRC) जैसे बचाव केंद्रों का दौरा करने का सुझाव देती हूँ। इस तरह, आप कुछ गंभीर रूप से बीमार जानवरों की भलाई और देखभाल में अपना योगदान करेंगे। ब्रिगिट के अनुसार, "भारत में लगभग 3,500 हाथियों को कैद में रखा गया है। जब मैंने 2011 के दिसंबर में जयपुर के हाथी गांव में डॉक्यूमेंट्री का फिल्मांकन शुरू किया, तो मुझे नहीं पता था कि यह फिल्म हाथी और मेरे निजी जीवन दोनों को कहां ले जाएगी। जानवरों के लिए मेरा प्यार है जो मुझे उनकी कठोर वास्तविकता को बाहर लाने और बेहतर जीवन पाने में उनकी मदद करने की ओर अग्रसर करता है। मैंने उनके दर्द और पीड़ा को बहुत करीब से अनुभव किया है। मैं उम्मीद करती हूँ कि डाक्यूमेंट्री फिल्म 'वेयर दि एलीफैंट स्लीप्स' हमारे ग्रह की एक महान और सबसे सार्थक कृतियों में से एक 'हाथी' की गहरी समझ को उत्प्रेरित करने में अपना योगदान देगी"। यह 'वेयर दि एलीफैंट स्लीप्स' फिल्म इन्टरनेट के माध्यम से, हिन्दी उपशीर्षकों के साथ वेबलिंक-https://vimeo.com/212454156 पर देखी जा सकती है।

श्री निमिष कपूर
वैज्ञानिक 'ई', विज्ञान प्रसार, ए-50, सेक्टर 62
नोएडा 201 309 (उ.प्र.)
ई-मेलः nimish2047@gmail.com]